Anveshan (अन्वेषण): A Multidisciplinary Journal in Hindi
Vol. 1, Issue 1 - 2017

पर्यावरण प्रबंधन एवं पर्यटन का विकास

सुमित्रा बेनल*

शोध सार (Abstract)

मानव सामाजिक प्राणी है। समाज अपने सदस्यों की जिम्मेदारी से बन्धनों से बंधा होने के कारण सामूहिक कर्त्तव्य और दायित्व का निर्वाह करता है। इसके लिए वह अनुकूल क्षेत्रों का चयन करता है और संपूर्ण समाज की आवश्यकता की पूर्ति के लिए पर्यावरण पर प्रभाव डालता है। इसलिए मनुष्य अपने ज्ञान, विज्ञान और तकनीकी उपकरणों से सुसज्जित होता है, अतः वह प्रगृति के साधनों का मनोनुकूल उपयोग करता है तथा प्रकृति और समाज की यह अंतःप्रक्रिया सामाजिक परिस्थिति की कहलाती है। सामाजिक पारिस्थितिकी संपूर्ण भौतिक और सामाजिक नियमों और व्यवस्थाओं का समुच्चय है। यह विश्वव्यापी सिद्धांत है।

इन समस्त बातों से पता चलता है कि मानव समाज की अंतःप्रक्रिया में जनसंख्या विकास का स्तर, सांस्कृतिक विरासत, रीति–रिवाज, धार्मिक मनोवैज्ञानिक विचार, ज्ञान विज्ञान और तकनीकी उपलब्धियाँ आधारभूत कारक हैं, जिनके अनुसार मानव समाज क्षेत्रीय आधार पर सांस्कृतिक–स्तर का निर्माण करता है। अतः मानव समाज अपनी उपलब्धियों के सहारे भौतिक परिवेश में अंतःप्रक्रिया कर सांस्कृतिक परिवेश या सांस्कृतिक भू–दृश्य की रचना करता है। यही उसकी पहचान का आधार है।

पर्यटन, कोई स्थान पर्यटन स्थल बन सकता है जब उसमें कुछ आकर्षण हो, जिसकी प्रत्याशित पर्यटकों के मस्तिष्क में एक छवि हो और इस आकर्षण के साथ ही वहाँ आवश्यक सुविधाएँ भी हो। पर्यटक आकर्षण विभिन्न प्रकार के हो सकते हैं। वह "प्राकृतिक" पर्यटन स्थल जैसे द्वीप, समुद्र तट, झीलें आदि हो सकते हैं, ऐतिहासिक जिसमें अतीत का कोई स्मृति (माण्डू मध्यप्रदेश के धार जिले में स्थित) चिन्ह हो सकता है या मानव द्वारा निर्मित जिन्हें विशेष रूप में पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए विकसित किया गया है, जैसे उपवन आदि।

पर्यटन एक ऐसी यात्रा (Traval) है जो मनोरंजन या फुरसत के क्षणों का आनंद उठाने के उद्देश्य से की जाती है। विश्व पर्यटन संगठन के अनुसार पर्यटक वे लोग हैं जो यात्रा करके आपने सामान्य वातावरण से बाहर के स्थानों में रहने जाते हैं, यह दौरा ज्यादा से ज्यादा एक साल के लिए मनोरंजन, व्यापार, अन्य उद्देश्यों से किया जाता है। यह उस स्थान पर किसी खास क्रिया से सम्बंधित नहीं होता है। पर्यटन दुनिया भर में एक आरामपूर्ण गतिविधि के रूप में लोकप्रिय हो गया है।

*शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, बरकतुल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल, मध्यप्रदेश।
Correspondence E-mail Id: editor@eurekajournals.com

© Eureka Journals 2017. All Rights Reserved.

पर्यटन का महत्व प्रत्येक देश में स्वीकार किया जा चुका है। पाश्चात्य जगत के विचारक मांटेन का कथन है कि पर्यटन के अभाव में कोई व्यक्ति पूर्ण शिक्षित नहीं कहा जा सकता। आधुनिक युग में प्रत्येक शिक्षा प्रणाली में पर्यटन की योजना अनिवार्य रूप से सन्निविष्ट है।

आदिकाल से मनुष्य पर्यटन का प्रेमी रहा है। मनुष्य की प्रकृति में पर्यटन का बीज परमपिता ने बोया है। मानवीय सभ्यता उसी के प्रस्करन का परिणाम है। जैसा कि नाम से स्पष्ट है, पर्यटन का तात्पर्य देश–विदेश में परिभ्रमण है।

विद्याध्ययन के लिए एक देश के छात्र दूसरे देश में जाते हैं। ऐसी यात्राओं से व्यक्तिगत उद्देश्यों के साथ साथ राष्ट्रीय उद्देश्यों की पूर्ति भी होती है। पर्यटन में देश–दर्शन की भावना सर्वोपहर होती है। प्रकृति कीक विविध मनोहारी छटाओं को चुरा–चुराकर हृदय में रखने से नेत्र और मन को शांति मिलती है, मार्ग में आने वाले नगरों, भवनों, वन–प्रांतरो आदि की शोभा और ग्रामश्री का आस्वादन करते जाना चाहिए।

आजकल के समय में हर व्यक्ति किसी ना किसी परेशानी से घिरा हुआ है, पैसे और चकाचौंध के बीच ऐसा लगता है मानो खुशी तो कहीं गुम हो गई है। बावजूद इन सबके हर व्यक्ति को अपने जीवन में कुछ समय ऐसा जरूर निकालना चाहिए जिससे वो दूसरे देश या जगह का पर्यटन करे और खुशियों को फिर से गले लगा सके। इसके लिए "विश्व पर्यटन दिवस" सबसे अच्छा मौका है। हर साल 27 सितम्बर को विश्व पर्यटन दिवस मनाया जाता है।

पर्यटन के लाभ

पर्यटन का अर्थ है–घूमना। बस घूमने के लिए घूमना। आनंद प्राप्ति और जिज्ञासा पूर्ति के लिए घूमना। ऐसे पर्यटन में सुख ही सुख है। ऐसा पर्यटन दैनिक जीवन की भारी भरकम चिंताओं को दूर करता है। जो व्यक्ति इस दशा में जितनी देर करता है, उतनी देर तक वह आनंदमय जीवन जीता है। देश पिदेश की जानकारी के साथ वहाँ का खान–पान, रहन–सहन तथा सभ्यता–संस्कृति की जानकारी मिलती है। और पर्यावरण एक स्वच्छ वातावरण एक शांतिपूर्ण और स्वस्थ जीवन जीने के लिए बहुत आवश्यक है।

हर किसी व्यक्ति को हमारे पर्यावरण को कैसे बचाया जाये और इसे सुरक्षित रखने के बारे में जानना चाहिए, ताकि इस ग्रह पर जीवन के अस्तित्व को जारी रखने के लिए प्रकृति का संतुलन सुनिश्चित हो सके।

प्रकृति की इस छेड़छाड़ से पर्यावरण बिगड़ता है और विभिन्न प्रकार के विकार प्रकट होते हैं। मनुष्य को इस भौतिकवादी दृष्टि और अतिरिक्त वृत्ति को छोड़ना होगा। दुर्भाग्य है कि आज न वन बचे हैं, न वन्य जीव सुरक्षित बचा है।

उद्योग–उद्योगों के उत्सर्जित रासायनिक पदार्थ धूल, धुआं एक ओर जहाँ पृथ्वी की उर्वरकता को समाप्त कर रहे हैं, वहीं उपयोगी जल को भी विषाक्त कर रहे हैं।

धूल और धुएं से जो प्रदूषण विकसित हो रहे हैं वे विभिन्न प्रकार के संक्रामक रोगों को जन्म देकर मनुष्य के जीवन को नारकीय बना रहे हैं। इन सबके प्रति जागरूकता आज के समय की मांग है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

[1]. दुबे, रेखा (2014) "मानव और पर्यावरण में अंतःक्रियात्मक संबंध" प्रकाशक इंडिया वाटर पोर्टल हिन्दी।
[2]. यादव, संतोष "पर्यावरण–पर्यटन समस्याएँ और सम्भावनाएँ" योजना, अगस्त 2002।
[3]. इंटरनेट ।

© Eureka Journals 2017. All Rights Reserved.